③ मॉण्टेसरी विधि :—

इस विधि में सबसे पहले गत्ते या लकड़ी से बने अक्षरों पर हाथ फेरने को कहा जाता है। जब उनकी उंगलियाँ सध जाती है तब स्वतन्त्र रूप से वर्ण लिखने को कहा जाता है। तब उन्हें कटे अक्षरों के बीच पेंसिल चलाकर अक्षर लिखना सिखाया जाता है। नीचे कागज रखकर खाली कटे हुए स्थानों पर पेंसिल चलाने से नीचे के कागज पर वर्ण बन जायेंगे और वर्ण लिखने के लिए हाथ का अभ्यास भी बालक को हो जायेगा।

④ जेकॉटॉट प्रणाली :—

⑤ पेस्तालाजी की रचनात्मक प्रणाली —

यह प्रणाली सरल से कठिन सूत्र पर आधारित है। इस प्रणाली में पहले अक्षर लिखना सिखाया जाता है सबसे पहले अक्षरों की आकृति को भिन्न-भिन्न टुकड़ों में तोड़ लिखा जाता है। छोटे बालकों के लिए फिर टुकड़ो के योग से उस अक्षर की रचना कराई जाती है।

⑥ चित्र विधि — इस प्रणाली में चित्रों की सहायता से शब्द और अक्षर सिखाये

Scanned with CamScanner

जाते हैं। इस विधि की सहायता से खेल-खेल में बच्चों को वर्ण रचना सीखा दिया जाता है।

जैसे - स,म, त, ग, न, वर्ण से सवार आदि शब्द बनाकर दिखाये जा सकते हैं।

(7) मनोवैज्ञानिक विधि - मनोवैज्ञानिक प्रणाली में वर्णमाला के अक्षर तथा शब्द आदि सीखाने की अपेक्षा पूर्ण वाक्य बोलना तथा लिखना सीखाया जाये।

* लिखित भाषा सीखाने में ध्यान देने योग्य बातें।

(1) लिखित भाषा सीखाने के लिए बालको को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए।

(2) लिखने के लिए समय तथा उपयुक्त वातावरण का भी ध्यान रखना चाहिए। कक्षा का वातावरण रुचिपूर्ण है।

(3) लिखना सीखने को तैयार होने पर उसे वर्णमाला के सभी अक्षरों को लिखना सीखाना चाहिए।

(4) जब बालक वर्णों की रचना सीख जाये, तब वर्ण मिलाकर शब्द बनाना और उसके पश्चात

Scanned with CamScanner

वाक्य लिखना सीखना चाहिए।

(5) लिखते समय बालकों के बैठने का उचित ढंग पर ध्यान दे। रीढ की हड्डी सीधी रहे। झुक कर लिखने की आदत न डाली जाये। घुटने 90° का कोण बनाते हो।

(6) लिखने की कापी आंखो से एक फुट की दूरी पर हो। यदि तख्ती पर लिखना हो तो वह चौरस व चिकनी हो।

(7) काली तख्ती पर खड़िया का प्रयोग होना चाहिए

(8) कलम अंगूठे व मध्य अंगुली के बीच में हो तथा पहली अंगुली कलम के उपर रहे। कलम को निब या पोइण्ट से 1 इंच ऊपर से पकड़ना चाहिए।

(9) हिन्दी में लिखने का क्रम बाये से दायें हो।

(10) बच्चों को सर्वप्रथम उनका नाम लिखना सीखाया जाये ऐसा करने से बच्चा प्रसन्नता का अनुभव करता है।

(11) विद्यार्थियों के सामने सुलेख के नमूने प्रस्तुत करने चाहिए जिससे वे अपना लेख सुधार सके। बच्चों के सुन्दर लेख की प्रदर्शनी लगायी जाए।

लिखित भाषा सीखने हेतु सुझाव –

(1) छात्रो के बैठने का आसन समुचित होना चाहिए, झुककर लिखने की आदत न पड़े।

(2) भाषा वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के सुधार हेतु अभ्यास कराया जाए।

Scanned with CamScanner

③ लिखने तथा पढ़ने की क्रियाएँ एक साथ होनी चाहिए।

④ अक्षरों तथा शब्दों के सुन्दर लिखने के लिए आदर्श प्रस्तुत किया जाये जिसका छात्र अनुकरण कर सके।

⑤ लेखन एक कला है जिसका विकास अभ्यास तथा अनुकरण से किया जा सकता है।

⑥ लेखन क्रिया छात्रों की रुचि के शब्दों से आरम्भ की जानी चाहिए।

⑦ शब्दों एवं अक्षरों की एक-रूपता गति से लिखने में मुख्य विशेषताओं का ध्यान रखा जाए।

Scanned with CamScanner

Date Unit — 1
4 point

Oral Language in class-room as a tool for learning सीखने के लिए मौखिक भाषा कक्षा उपकरण के रूप में —

जब बालक अपने भावों तथा विचारों को तार्किक क्रम में कलात्मक ढंग से मौखिक रूप से अभिव्यक्त करता है तो उसे मौखिक अभिव्यक्ति कहते हैं।

भाव-प्रकाशन में मौखिक भाषा उपकरण के रूप में

1. सत्संग :-
2. संवाद - पाठ :-
3. नाटक - प्रयोग :-
4. वाद - विवाद
5. कहानी - कथन :-
6. चित्र-माला :-

मौखिक भाषा कक्षा-कक्ष में परिचर्चा अधिगम के एक उपकरण के रूप में :-

हम किसी भी विषय पर पक्ष और विपक्ष दे सकते हैं — इससे निम्न लिखित सुधार होते हैं।

1. छात्रों की अभिव्यक्ति का विकास होता है।
2. छात्रों में आत्म विश्वास उत्पन्न होता है।
3. संकोच या हिचक का व्यवहार समाप्त होता है।
4. बच्चों में तर्क शक्ति का विकास होता है।
5. बच्चों को विषय की पूरी जानकारी प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

कक्षा-कक्ष परिचर्चा

शिक्षक पूर्व निर्धारित पाठ्य-वस्तु का शिक्षण कक्षा-कक्ष में करता है वह अपने कथानक या प्रकरण को शिक्षण के बाद विद्यार्थियों में उसी प्रकरण पर परिचर्चा करवाता जिससे बच्चों में मौखिक भाषा का विकास होता है। कक्षा-कक्ष परिचर्चा में शिक्षक निर्देशक की भूमिका निभाता है।

प्रश्न पूछने की कला :-

बच्चों में प्रश्नोत्तर के समय भी मौखिक भाषा का विकास होता है इस साधन उपकरण में शिक्षक को मौखिक भाषा में प्रवीण होना चाहिए क्योंकि आपका प्रभाव छात्रों पर पड़ता है जो निम्न बिंदु है —

(i) स्वर।
(ii) प्रश्न पूछने की गति या उत्तर देने की गति या लय।
(iii) प्रश्न एवं उत्तर का विवरण।
(iv) शिक्षक का व्यवहार।

कक्षा-कक्ष में प्रश्न पूछना :-

बोसिंग के अनुसार "प्रश्न करने की कला का महत्व स्वीकार किये बिना कोई भी शिक्षण विधि सफलतापूर्वक लागू नहीं की जा सकती। इस प्रणाली में ध्यान देने योग्य बात यही है कि उनका श्रृंखलाबद्ध वर्ण उत्तर के रूप में आ जाए।"

Scanned with CamScanner

प्रकरण के मध्य में अध्यापक को प्रश्नोत्तर तकनीक का प्रयोग करना चाहिए।

छात्राध्यापकों में मौखिक अभिक्षमता विकास में ध्यान योग्य बातें —

मौखिक भाषा में भाव-प्रकाशन के समय शिक्षक को निम्न सावधानियों की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिए—

1. उच्चारण अभ्यास के लिए स्वर-यन्त्रों को साधा जाये।
2. यदि को बालक प्राकृतिक कारणों से शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता है तो उसका कारण मनोविज्ञान द्वारा खोज कर अभिभावक से अवगत कराना।
3. बालक की भय की भावना को निकाल कर अभ्यास द्वारा कठिनाई दूर की जा सकती है।
4. शिक्षक बोलने का आदर्श दृष्टान्त प्रस्तुत करे जिसमें तेजी, क्रोध तथा शीघ्रता न हो।
5. किसी प्रकार का संकोच बच्चों में न आने पाये।
6. बालक किसी भी प्रकार अपने को कक्षा के अन्य छात्रों से हीन न समझे। इसके लिए उसे प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।
7. प्रश्नों के उत्तर पूर्ण हों जिससे बालकों को अधिक से अधिक बोलने का अवसर मिले।
8. बोलते समय सस्वरता तथा भावनानुसार वर्णों के उतार-चढ़ाव पर भी ध्यान देना चाहिए। देश, काल और पात्र के अनुसार ही भाव प्रकाशन हो।
9. भाषा में सरलता, मधुरता और लालित्य हो।

Scanned with CamScanner